

Dr. Dargaga Mishra
Dept of Geography

B.A. Part-1st
(Subsidiary)

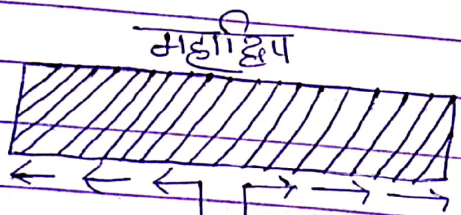
①

पृष्ठ - हिमालय के पर्वत निर्माणकारी सिद्धांत (संपादन) का व्याख्यात्मक विवरण।
उपरोक्त सिद्धांत का प्रस्ताव कोणार्थ ने किया।
उपरोक्त सिद्धांत का प्रतिपादन 1928-29 में कोणार्थ ने किया।
इस सिद्धांत के अनुसार पृथ्वी का आंतरिक संरचना की रचना क्रस्ट (पपड़ा) तथा निचले मंडल की रचना द्वारा स्तर नाम दिया।
क्रस्ट की रचना सीमा स्थित तथा क्रस्ट की रचना सीमा से हुई है।
सिद्धांत महासागरों के बीच नदी पाया जाता है।
संपादनीय तरंगी क्रस्ट चट्टानों में स्थित रेडियो सक्रिय पदार्थों पर आधारित होता है।
पृथ्वी के उपरोक्त भागों में रेडियो सक्रिय पदार्थों की अधिकता के कारण इस पदार्थों में विघटन होता है।
जिससे ऊष्मा उत्पन्न होता है।
ऊपर की पपड़ा में विकिरण के कारण ताप निरंतर नष्ट होत रहता है।
इसके विपरीत पृथ्वी के आंतरिक भागों की चट्टानों में रेडियो सक्रिय पदार्थों की मात्रा कम पाई जाती है, परंतु ताप का संचयन होता रहता है।
इस कारण परत में आवधिक ताप ही जाता है।
जिससे पृथ्वी के आधः स्तर से संपादन तरंगी उत्पन्न होकर ऊपर की तरफ चली लगती है।

कमला

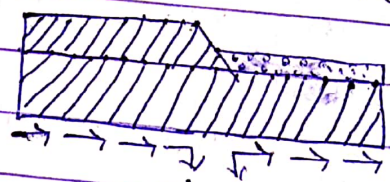
पृष्ठा की स्थितियाँ होती हैं।
 (1) संपन्न तरंगी रूप में प्रवाहित होता है।
 जहाँ पर फैलाव द्वारा स्थल भाग
 विभक्त होकर विपरीत
 सागर का निर्माण हो और बीच में

(2) जब ऊपर उठने वाला तरंगी रूप - बसरे के पहँचाकर क्षितिज क्षिणा में
 चरम में समन प्रवाहित होता
 का निर्माण होता है।



आरीहा तरंगी

महाद्विपाय निम्न तर



आरीहा तरंगी

* आरीहा रूप आरीहा तरंगी का प्रवाह क्षिणा →

संपन्न तरंगी का उत्पत्ति महाद्विप रूप
 महासागर के नीचे होता है। महाद्विप
 के नीचे चरम वाला तरंगी अधिक
 वेगवता होता है। क्योंकि इसमें रेडिया
 सक्रिय पदार्थ अधिक पाये जाते हैं।

जब आरिही संपादनिक तरंगी महाद्विपीय निमाज
 तट के नीचे मिलकर नीचे की ओर
 मुड़ते हैं तो संपादन के क्रिया के
 कारण आवतलन हीकर मुआमिनत का
 निर्माण होता है। आरिही तरंगी द्वारा
 महाद्विपीय की महासागरी का तला के
 नीचे कुछ भागी की उच्च ताप के
 कारण पिघलाकर मुआमिनत में जमा
 करता है। इस प्रकार महाद्विपीय परत
 पतली होती रहती है। निरंतर संपादन
 रस तलछट जमाव के कारण मुआमिनत
 में निरंतर घंसाप होता रहता है। तथा
 पर्वत का उत्पति रस ध्यान होते रहता
 है।

पर्वत निर्माण की अवस्था की कार्यर
 हमेशा न तीन अवस्थाओं के द्वारा
 समझाने समझाने का प्रयास किया है।

1. प्रथम अवस्था → इसमें संपादनिक तरंगी
 मिलकर महाद्विपीय तरंगी के नीचे
 मुआमिनत का निर्माण करता है।
 तरंगी वीगबता होती है। मुआमिनत
 में तलछट का जमाव होता है तथा
 वह निरंतर भार के कारण घंसाती
 रहती है।

2. द्वितीय अवस्था → इस अवस्था में तरंगी
 का प्रति आव्यधिक तीव्र हो जाता
 है। इस अवस्था में आरिही तरंगी
 के द्वारा शीतल पदार्थ का आवतलन

अवस्था: